Available at: *https://anubooks.com/journal-volume/shodhmanthan-vol-xvi-dec-2025-no4*

महात्मा गाँधी की स्वदेशी अवधारणा की वर्तमान में प्रसांगिकता

प्राप्तिः 30.10.25
स्वीकृतः 21.11.25

96

टिंकी चौधरी
पीएचडी रिसर्च स्कॉलर (राजनीति विज्ञान विभाग)
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उ0प्र0
ईमेलः tinkychoudhary66@gmail.com

सारांश

महात्मा गाधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के ना केवल एक प्रमुख नेता थे बल्कि एक दार्शनिक और समाज सुधारक भी थे। जिनके विचार आज भी प्रासंगिक है। महात्मा गांधी ने स्वदेशी को स्वराज की आत्मा कहा था। स्वदेशी गांधी के जीवन दर्शन का मूल तत्व है स्वदेशी का अर्थ केवल विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना ही नहीं था बल्कि यह एक व्यापक दर्शन था जो सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक आत्मर्निभरता का बढ़ावा देता था।

स्वदेशी आंदोलन महात्मा गांधी के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था जो भारतीय समाज के सभी वर्गों को एकजूट करने और एक साझा उद्देश्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करता था यह आंदोलन भारतीय को उनकी शक्ति और आत्मविश्वास का एहसास दिलाने का माध्यम था। गांधी जी का यह विश्वास था कि केवल एकजुटता और आत्मर्निभरता के माध्यम से ही भारत स्वतंत्रता और समृद्धि प्राप्त हो सकती है। इसके माध्यम से उन्होंने भारतीयों को आत्मर्निभरता की ओर प्रेरित किया ताकि विदेशी शासन से मुक्ति पा सके और अपने संसाधनों और सामर्थ्य का सही उपयोग कर सके।

इस शोध पत्र में महात्मा गांधी के स्वदेशी की अवधारणा के ऐतिहासिक संदर्भ तथा वर्तमान में प्रासंगिकता का गहन विश्लेषण किया गया है जहां आर्थिक आत्मर्निभरता, स्टार्टअप्स और सूक्ष्म लघु एंवम मध्यम उद्धमो (MSME) तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, लोकल फोर वोकल, नैतिक उपभोग, ग्रामीण विकास और रोजगार सृजन, विकसित भारत, पर्यावरण स्थिरता आदि को बढ़ावा देना का प्रयास कर रहा है। वर्तमान समय में हम विचार करते हैं तो यह बात समझ में आती है कि स्वदेशी की अवधारणा वैश्वीकरण, उदारीकरण, तकनीकी प्रगति के युग में आज भी प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द

स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, लोकल फोर वोकल, नैतिक उपभोग, पर्यावरण स्थिरता, वैश्वीकरण, उदारीकरण, तकनीकी प्रगति।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.96

गाँधी जी की स्वदेशी की अवधारणा

स्वदेशी वह भावना है जो हमें दूर दराज के इलाको को छोडकर अपनी समीपस्थ क्षेत्र का उपयोग, करने उनकी सेवा करने तक सीमित करती है। आम आदमी की घोर नीरधनता का कारण आर्थिक ओर औधोगीक क्षेत्र स्वदेशी का त्याग है। यदि एक भी चीज भारत के बाहर से न खरीदी जाती तो इस देश मे घी दुध की नदियाँ बह रही होती। लेकिन ऐसा नही होना था। हम लालची है ओर हम जैसा लालची इग्लैण्ड भी था। यदि हम स्वदेशी के सिद्धान्त का पालन करे तो आपका ओर मेरा यह कर्तव्य हो जायोगा की एसे पडोसियो को ढूढे जो हमारी आवश्यकता की वस्तुए हमे दे सके और यदि वे किन्ही वस्तुओ का उत्पादन करने मे अस्मर्थ हो तो हम उन्हे अपेक्षित प्रशिक्षण दे।

महात्माँ गाँधी जी स्वदेशी की अवधारणा उनके आर्थिक, सामाजिक और नैतिक विचारो का मूल आधार थी उन्होने स्वदेशी को केवल आर्थिक नीति के रुप मे नही ब्लकि इसे एक जीवन दर्शन के रुप में प्रस्तुत किया उनके अनुसार स्वदेशी का अर्थ है। अपने देष में उत्पादित वस्तुओ ऐर सेवाओ को प्राथमिकता के देना। तथा देश मे बने वस्त्र समान और संसाधनो का उपयोग करना तथा विदेशी वस्तुओ पर निर्भरता को कम करना था।

स्वदेशी के आयाम

स्वदेशी का राजनितिक आयामः गाँधी जी ने 1909 में अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज या भारतीय स्वशासन में आंतरिक शासन (स्वराज) की आवश्यकता पर बल दिया था वे राजनीतिक स्वशासन के मध्य से लोगो को सशक्त बनाना चाहते थे। विकेन्द्रीक्रत राजनीतिक व्यवस्था का उनका द्रष्टिकोण पचायतीं राज था। गाँधी जी ने समाज के पिरामिडनुमा सरचनां के विपरित व्यक्ति को समाज के केन्द में रखते हुएँ महासागरीय वृत्त की अवधारणा प्रस्तुत करके ग्राम स्वराज के अपने द्रष्टिकोण को और स्पष्ट किया असंख्यक गावो से बनी इस सरचनां में निरंतर विस्क्रत होते हुए कभी ऊपर न उठने वाले वृत्त होगे। जीवन एक पिरामिड नही होगा जिसका शीर्ष तल से टिका होगा। बल्कि यह एक महासागरीय वृत्त होगा जिसका केन्द वह व्यक्ति होगा जो गाँव के वृत्त के लिए सदैव मिटने को तैयार रहेगा जब तक कि अंततरू समग्रता व्यक्तियो से बना एक जीवन ना बन जाए तो अपने अंहकार मे कबी आक्रमक न हो ब्लकि सदैव विन्रम हो उस महासगरीय वृत्त की महिमा को साझा करे जिसकी वे अभिन्निन इकाइयाँ है।

स्वदेशी का सामाजिक आयामः स्वदेशी भावना को भारतीय समाजिक सरचनां के सन्दर्भ मे लागु करते हुए गाँधी जी ने शुरु मे इससे जुडी वर्ण व्यवस्था को स्वीकार किया उन्होने समाज को चार स्तरीय विभाजन का स्वागत किया जो विशुद्ध रुप से विभिन्न वर्गो के लोगो दूआरा किए जाने वाले कर्तव्य पर आधारित था। वे सभी व्यव्सायों को समान रुप से महत्वपूर्ण मानते थे उन्होंने कुछ घृणित प्रथाओं को त्याग कर जाति व्यवस्था के दोषो को दूर करने का गंभीर प्रयास किया जिन्हें वे ऐतिहासिक वृद्धि मानते थे जो मूल व्यवस्था का अभिन्न अंग नहीं थी उन्होंने जन्म और उससे जुड़ी सामाजिक स्थिति पर आधारित प्रचलित जाति व्यवस्था का कड़ा विरोध किया यही कारण था कि उन्होंने अस्पृश्यता के अभिशाप के खिलाफ सबसे अथक संघर्षों में से एक शुरू किया जो भारत में जाति व्यवस्था का एक अभिन्न अंग था वह समाज के कमजोर वर्गों जैसे दलित, महिलाओं,

आदिवासियों, कुष्ठ रोगियों आदि की समस्याओं और दुर्दशा के बारे में गहराई से चिंतित थे। उनका मानना था समाज के वंचित वर्गों के उत्थान को अपने 18 सूत्री रचनात्मक कार्यक्रम का उद्देश्य शैक्षिक और भागीदारी पूर्ण सामाजिक कार्यवाही के माध्यम से समाज का पुनर्निर्माण करना था एक तरह से रचनात्मक कार्य नागरिक समाज गैर सरकारी संगठनों की भूमिका निभाता है

स्वदेशी का आर्थिक आयामः गांधी जी के स्वदेशी की आर्थिक परिप्रेक्ष्य में जहां वह आत्मनिर्भरता जिसका लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति और समुदाय अपनी आवश्यकताओं को स्थानीय संसाधनों से पूर्ण करना है स्थानीय उद्योगों का विकास जिसमें खादी, हस्तशिल्प, चरखा, हथकरघा और लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दिया गया जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिले रोजगार सृजन जहां बेरोजगारी की समस्या को कम करने में मदद मिलेगी पूंजी का देश में संचय विदेशी वस्तु पर खर्च होने वाली भारतीय धनराशि देश के भीतर ही बचे और देशी उधोगों में लगाई गई इससे भारत की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

स्वदेशी का धार्मिक आयामः गांधीजी ने स्वदेशी के अपने विचार को धर्म से जोड़ा उनके अनुसार स्वदेशी अध्यात्म और धर्म के दर्शन से जुड़ा हुआ था, उन्होने आर्थिक स्वदेशी के बदले की वजह से किए गए बहिष्कार आंदोलन के रूप में नहीं बल्कि एक धार्मिक सिद्धांत के रूप में माना जिसका सभी पालन करें उनका मानना था कि व्यक्तियों को होने वाले शारीरिक परेशानी के बावजूद पूरी श्रद्धा से किया जाने वाला एक धार्मिक सिद्धांत था स स्वदेशी के विचारों के अनुरूप एक व्यक्ति सौ चीजों के बिना करना सीखेगा जिसे आज वह आवश्यक मानता है, गांधी जी के अनुसार धर्म में स्वदेशी गौरवशाली अतीत को मापने और वर्तमान पीढ़ी में से फिर से लागू करने के लिए सीखाता है, उन्होंने बताया कि उसे समय यूरोप में अराजकता चल रही थी, उसमें दिखाया गया कि आधुनिक सभ्यता ने बुराई और अंधकार की शक्तियों का प्रतिनिधित्व किया जबकि प्राचीन अर्थात भारतीय सभ्यता अपने सार दैविय बल का प्रतिनिधित्व करती थी। भारतीय सभ्यता जो आध्यात्मिक थी कि तुलना में आधुनिक सभ्यता मुख्य रूप से भौतिकवादी विनाशकारी थी स्वदेशी का संबंध हिंदू धर्म से है। गांधी जी के लिए हिंदू धर्म समावेशी सहिष्णु और सुधारवादी था, उस अर्थ में गांधी को स्वदेशी हिंदू धर्म की परंपरा को संजोकर रखती है।

स्वदेशी अवधारणा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

स्वदेशी आंदोलनः 1905 के बंगाल विभाजन के विरोध में स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ। लेकिन गांधी जी ने इसे राष्ट्रीय स्तर पर एक व्यापक आंदोलन का रूप दिया उन्होंने खादी को स्वदेशी का प्रतीक बनाया क्योंकि यह ना केवल स्थानीय कारीगरो को रोजगार प्रदान करता था बल्कि भारतीय में आत्म सम्मान और स्वालंबन की भावना भी जागृत करता था तथा भारतीय गौरव की भावना को बढ़ावा देते थे। स्वदेशी आंदोलन का मुख्य उद्देश्य विदेशी वस्त्रो और सामान का बहिष्कार करना तथा भारतीय कुटीर उद्योग और स्वदेशी वस्तु का प्रोत्साहन देना था। 1909 के गांधी के 'हिंद स्वराज' में स्वराज, सत्याग्रह और स्वदेशी प्रमुख सिद्धांत है। स्वराज को साकार करने के लिए उनका माना था कि स्वदेशी का आदर्श हर मायने में आवश्यक था वे स्वदेशी को एक और बड़े स्तर तक ले गए और इसे जनता की भीड़ जुटाने के साथ एक शक्तिशाली राजनीतिक आंदोलन

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i04.96

बनाया उन्होंने स्वदेशी राजनीति का एक नया रूप बनाया जहां उनका स्वदेशी उपभोक्ताओं के लिए आहावन है कि वे उन विनाशों से अवगत हो जो उन उद्योगों का समर्थन करते हैं जो गरीबी, श्रमिकों को नुकसान पहुंचाने और मनुष्य और अन्य प्राणियों के लिए नुकसानदेह है।

खादी आर्थिक निर्भरता का प्रतीकः गांधी जी के राष्ट्रवादी आंदोलन ने स्वदेशी की समकालीन राजनीति और अर्थशास्त्र के संदर्भ में इसके महत्व को परिभाषित करते हुए खादी को एक संपूर्ण अवधारणा बना दिया है स्वदेषी के प्रचार को ने प्रभावी ढंग से रोजमर्रा के जीवन की सामान्य वस्तु घर पर बने व बुने हुए कपड़ों को भारतीय समुदाय के पूर्ण प्रतीक में बदल दिया। क्षेत्रीय, धार्मिक जातिगत और वर्गीय पहचान के दृश्य प्रतीको के संबंध में खादी एक दृश्य प्रतीक बन गई क्योंकि इसने अलग–अलग निकायों को भारतीय रूप में चिन्हित किया है। खादी भारत की संभावित आर्थिक आत्मनिर्भरता और ब्रिटिश की भारतीय की गरिमा और उनके बीच एकता का संचार करने का एक प्रभावी माध्यम बन गया गांधी जी ने समाज में अपने व्यावहारिक अनुप्रयोग में खादी के सिद्धांत की आवश्यक और सबसे महत्वपूर्ण आधार के रूप में पाया उन्होंने खादी उद्योग के विकास के महत्व पर बोल दिया खादी अपनी आर्थिक स्वतंत्रता और समानता और स्वराज की भारतीय मानवता की एकता के प्रतीक थी उनका मानना था कि खादी उद्योग के विकास से लाखों लोग गरीबी और भूख से बचेंगे।

महात्मा गांधी के चरखे की अवधारणाः स्वदेशी आंदोलन को सफल बनाने और आत्मनिर्भरता की भावना को जागृत करने के लिए गांधी जी ने चरखे को प्रतीक के रूप में अपनाया उनके लिए चरखा केवल सूत कातने का यंत्र नहीं बल्कि अहिंसा और सामाजिक व आर्थिक मुक्ति का एक शक्तिशाली प्रतीक था उनके चरखे को ब्रिटेन के औद्योगिक षक्ति का विरोध करने भारतीय को आत्मनिर्भर बनाने और ऐसे भारत का निर्माण करने के औजार के रूप में देखा जहां आम जनता कपड़ों से अपना उत्थान कर सके।

गांधी जी ने कहा था जीवन का चक्र जहां मानसिक शांति के लिए चरखा कातिये चरखे का संगीत आपकी आत्मा के लिए मरहम का काम करेगा उनका विश्वास था कि हम जो सूत कातते हैं वह हमारे जीवन के टूटे ताने–बाने को जोड़ने का सामर्थय रखता है चरखा अहिंसा का प्रतीक है जिस पर यदि हम सच्चा जीवन जीना चाहते हैं तो संपूर्ण जीवन आधारित होना चाहिए।

चर्खियों द्वारा आर्थिक पुनरुद्धार चरखा दुनिया के राश्टो के प्रति किसी दुर्भावना का प्रतीक नहीं है बल्कि यह एक स्वालंबन सद्भावना का संदेशवाहक है इससे विश्व की शांति और उसके संसाधनों के दोहन के लिए कोई खतरा पैदा होने वाला नहीं है जिसके लिए नौसेना की सहायता के लिए आवश्यकता हो हां इसके लिए हमारे लाखों करोड़ों देशवासियों को यह धार्मिक संकल्प लेना होगा कि जिस प्रकार वह अपना खाना अपने घरों में ही पकाते हैं उसी प्रकार अपनी आवश्यकता का सूत भी अपने घरों में ही कातेगे गांधी जी ने चरखे का इस्तेमाल की वकालत की ओर चरखे को अहिंसा का प्रतीक मानना उनका मानना था 'चरखा चलाकर स्वराज' चरखे का संदेश उनकी परिधि से अधिक व्यापक है उनका संदेश है सादगी, मानव जाति की सेवा इस प्रकार जीना की दूसरे को कष्ट न पहुंचे धनवान और निर्धन, पूंजी और श्रम तथा तथा राजा और रंग के बीच अमिट संबंधों की स्थापना। चरखा सर्वाधिक सहज सरल और व्यावहारिक ढंग से हमारे आर्थिक क्लेश की

समस्या का समाधान कर सकता है यह राष्ट्र की समृद्धि का और इसलिए स्वतंत्रता का प्रतीक है यह वाणिज्यक युद्ध का नहीं अपीतु तो वाणिज्यक शांति का प्रतीक है।

महात्मा गांधी की स्वदेशी अवधारणा की वर्तमान में प्रासंगिकता

महात्मा गांधी ने स्वदेशी को केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के रूप में नहीं देखा बल्कि एक समग्र जीवन दर्शन था जो सामाजिक समानता, आत्मनिर्भरता, स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन, पर्यावरण स्थिरता, नैतिक उपभोग, ग्रामीण विकास को केंद्र में रखते हैं, उनका मानना था कि भारत की सच्ची स्वतंत्रता और स्थाई विकास की ओर बडना है तो उसे अपने ही संसाधनों, कारीगरों और समाज व सांस्कृतिक जड़ों पर विश्वास करना होगा। महात्मा गांधी के स्वदेशी की अवधारणा आज भी भारत के आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र के विकाष के लिए तथा वैश्वीकरण, उदारीकरण और तकनीक प्रगति के युग में प्रासंगिकता को देखा जा सकता है।

आर्थिक आत्मनिर्भरताः स्वदेशी का मूल लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति और समुदाय अपनी आवश्यकताओं को स्थानीय संसाधनों से पूरा करें। उससे सम्मान, श्रमशीलता, और संतुलन का भाव उत्पन्न होता है वर्तमान में भारत सरकार द्वारा षुरू किया गया 'आत्मनिर्भर भारत' गांधी जी के स्वदेशी अवधारणा से प्रेरित है यह अभियान स्थानीय उद्योग स्टार्टअप्स और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उधमो (MSME) को बढ़ावा देने पर केंद्रित है तथा हथकरघा उद्योग भारत का सबसे बड़ा व्यापार बड़ा पारंपरिक कुटीर उद्योग है जिसमें 35 लाख से अधिक कारीगर संलग्न है इन श्रमिकों में एक बड़ी संख्या 72% महिलाएं जिन्हें इससे आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त होती है।

विदेशी वस्तुओं का बहिष्कारः गांधी जी के अनुसार हर विदेशी वस्तु जो हम खरीदते हैं वह किसी भारतीय का पेट काटती है स्वदेशी अपनाकर गांधी जी ने आर्थिक निर्भरता को तोड़ने का सफल प्रयास किया जो आज भी Local for vocal जैसे अभियानों में परिलक्षित होता है वर्तमान संदर्भ में इन योजनाओ और अभियान भी गांधीजी के सोच का आधुनिक संस्करण है इनका उद्देश्य है घरेलू उत्पादों को बढ़ावा देना, स्थानीय उत्पादों का वैश्विक बाजार तक पहुंचाना, रोजगार निर्माण आय का विकेंद्रीकरण सुनिश्चित करना। कोविड –19 (covid–19) महामारी के दौरान जब वैश्विक आपूर्ति श्रखलाए प्रभावित हुई तो भारत ने स्वदेशी उत्पादनो पर ध्यान केंद्रित करके अपनी स्थिरता को बनाए रखा।

विकसित भारतः भारत सरकार ने वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित समूह और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केवल आर्थिक वृद्धि तकनीकी विकास और आधारभूत ढांचे के निर्माण पर बल देना प्राप्त नहीं है इसके लिए आवश्यक है कि विकास की प्रक्रिया लोकल से ग्लोबल की और समावेशी और सांस्कृतिक आधारित टिकाऊ अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों पर आधारित है इस संदर्भ में महात्मा गांधी की स्वदेशी की अवधारणा एक व्यावहारिक और नैतिक मार्गदर्शन के रूप में सामने आती है।

सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मानः स्वदेशी न केवल आर्थिक नीति बल्कि एक सांस्कृतिक गौरव और आत्मसम्मान कभी बढ़ावा देता हैं सांस्कृतिक के क्षेत्र में स्वदेशी दृष्टिकोण का अर्थ है स्थानीय कला, संगीत, परंपराए, वेशभूषा और आचार विचार को महत्व देना ना कि आधुनिकीकरण करना। वर्तमान समय के वैश्वीकरण के दौर में पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा

है और स्वदेशी भारतीय संस्कृति परंपराओं को संरक्षित करने का एक माध्यम बन सकता है स्वदेशी भारत के सांस्कृतिक विविधता को जीवित रखने में मदद करता है।

नैतिक उपभोगः गांधी जी का जीवन स्वयं सरलता और पर्यावरण चेतना का प्रतीक था जहां कम संसाधनों में भी गरिमा पूर्ण और संतुलित जीवन जिया जा सकता है गांधी जी का नैतिक उपभोग का सिद्धांत केवल व्यक्तिगत आचरण का मार्ग नहीं बल्कि एक सामूहिक सामाजिक दर्शन है। यह हमें उपभोग के माध्यम से समाज, कारीगर, पर्यावरण और राष्ट्र के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देता है।

पर्यावरण स्थिरताः पर्यावरण स्थिरता का लक्ष्य पृथ्वी के प्राकृतिक वातावरण और पारिस्थितिक तंत्र में संतुलन बनाए रखना है ताकि भविष्य की पीढीया भी अपनी जरूरतो को पूरा कर सके तथा मौजूदा और भावी पीढियो की भलाई सुनिश्चित करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों को बुद्धिमानी से संतुलित तरीके से उपयोग करने के सम्ब्रता है पर्यावरण्यीय स्थिरता के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना जो खत्म नहीं होते गांधी जी का स्वदेशी पर्यावरण स्थिरता के सिद्धांत से गहराई से जुड़ा है स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने से आयात पर निर्भरता कम होती है जिस से कार्बन उत्सर्जन में कमी आती है साथ ही पारंपरिक और हस्त निर्मित उत्पाद अक्सर पर्यावरण के लिए काम हानिकारक होते हैं खादी जैसे जैविक कपड़े पर्यावरण अनुकूल विकल्प है।

ग्रामीण विकास और रोजगार सृजनः गांधीजी का स्वदेशी दर्शन जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने पर केंद्रीत था। जिसका अर्थ 'अपने देश में निर्मित' उन्होंने स्वदेशी को ग्रामीण विकास आत्मनिर्भरता और ग्राम स्वराज से जोड़ा जिसमें छोटे, कुटीर उद्योग और स्थानीय संसाधनों के उपभोग पर जोर दिया गया जिसमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हो और स्थानीय स्तर पर रोजगार पैदा हो सके वर्तमान समय में खादी तथा हस्तशिल्प उद्योग आज भी लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं तथा खादी ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) ने 2020–21 में 9.54 लाख लोगों को रोजगार प्रदान किया जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक मजबूती लायी जा सके जो वर्तमान में गांधी के सदस्य की शक्ति को दर्शाता है।

शिक्षा में स्वदेशी दृष्टिकोणः गांधीजी नें शिक्षा में स्वदेशी को अत्यधिक महत्व दिया उनका मानना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो भारतीय जीवन संस्कृति मूल्य पर आधारित हो इससे छात्र अपने देश की सभ्यता, भाषा और परंपराओं से जुड़ाव महसूस करें उन्होंने शिक्षा को नई तालीम (Basic Education) से जोड़ा जिसमें बुनाई, कताई, हस्तकला, कृषि आदि कार्यो के साथ बौद्धिक शिक्षा दी जाती थी वर्तमान समय में नई शिक्षा नीति 2020 गांधी जी के विचारों के पुनपुस्टि करती है जो भारतीय समाज, भाषा, कारीगरी नैतिक मूल्य से जुड़ी है।

निष्कर्षः

महात्मा गांधी के स्वदेशी की अवधारणा न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण हिस्सा थी बल्कि भारतीय समाज के राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक पुनर्निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कद था उनका उद्देश्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं था बल्कि उन्होंने

समाज को नई दिशा जो आज भी स्वदेशी की अवधारणा यह सिखाती है जो स्थानीय संसाधनों पर आधारित विकास समाज को आत्मनिर्भर बनती हैं नैतिक उपभोग से संसाधनों को न्यायपूर्ण वितरण होता है तथा वर्तमान में चल रहे जैसे 'आत्मनिर्भर भारत', मेक इन इंडिया, वोकल फोर लोकल गांधीवादी सोच के आधुनिक संस्करण हैं जो प्रयोग में लाये जा रहे हैं।

संदर्भ

1. आर के प्रभु और यू. आर. राव द माइंड ऑफ महात्मा गांधी, (अहमदाबाद नवजीवन 1994)।
2. गांधी एम. के. (1909) हिंद स्वराज।
3. त्रिवेदी एल (2015) गांधी का आर्थिक दर्शन और आधुनिक भारत, (नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन)।
4. भारत सरकार (आत्मनिर्भर भारत) अभियान दस्तावेज 2020।
5. यंग इंडिया (1921 पृ० सं०–406)।
6. हरिजन. (1947 पृ० सं०–122)।
7. सीबी. के जोसेफ द्वारा गांधी रिसर्च फाउंडेशन महात्मा गांधी. www-mkgandhi@org.
8. खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) वार्षिक रिपोर्ट (2020–2021)
9. भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय, नई शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार 2020
10. www-handlooms-nic-in]www-hathkargha-infoA